6.9

Demography

Shashi Bhushan
Rakesh Pushap

Semester–V

In Accordance with the National Education Policy (NEP)

Principal
GC Nagrota Bagwan
Distt. Kangra (H.P)

Scanned with OKEN Scanner

Printing History: First Edition: 2025-26

Syllabus Covered: Strictly according to the syllabus prescribed by Kurukshetra University, Kurukshetra for B.A., Sem.-V

Medium: ENGLISH (Hindi Medium is also available)

Price: One Hundred Sixty Two Rupees (₹ 162/-)

ISBN: 978-93-5612-959-7

© Copyright Reserved by the Authors

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, without written permission from the publishers.

Published By: **VK Global Publications Pvt. Ltd.**

Regd. Office:
4323/3, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002
Ph: 91-11-23250105, 23250106

Corporate Office:
15/1, Main Mathura Road, Faridabad (NCR)
Haryana-121003
Phone: 0129-7117719-48 lines
Email: mail@vkpublications.com
www.vkpublications.com

Printed At: VK Global Digital Pvt. Ltd.
Plot No. 928, Sector 68, IMT Faridabad, Haryana-121004

Trademark Acknowledgements:
All brand names and product names used in this book are trade names, service marks, trademarks or registered trademarks of their respective owners. VK Global Publications Pvt. Ltd. is not associated with any product or vendor mentioned in this book.

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, some errors might have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publishers nor the author or seller will be responsible for any damage or loss of action to anyone, of any kind, in any manner, there from. For binding mistakes, misprints or for missing pages, etc. the publisher's liability is limited to replacement within one month of purchase by similar edition. All expenses in this connection are to be borne by the purchaser.

Scanned with OKEN Scanner

जनांकिकी

(Demography)

Shashi Bhushan
Rakesh Pushap

Semester–V

In Accordance with the National Education Policy (NEP)

Princ
GC Nagrota Bagwan
Distt. Kangra (H.P)

Scanned with OKEN Scanner

Printing History: First Edition: 2025-26

Syllabus Covered: Strictly according to the syllabus prescribed by Kurukshetra University, Kurukshetra for B.A., Sem.-V

Medium: HINDI (English Medium is also available)

Price: One Hundred Sixty Two Rupees (₹ 162/-)

ISBN: 978-93-5612-537-7

© Copyright Reserved by the Authors

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, without written permission from the publishers.

Published By: **VK Global Publications Pvt. Ltd.**

Regd. Office:
4323/3, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002
Ph: 91-11-23250105, 23250106

Corporate Office:
15/1, Main Mathura Road, Faridabad (NCR)
Haryana-121003
Phone: 0129-7117719-48 lines
Email: mail@vkpublications.com
www.vkpublications.com

Printed At: VK Global Digital Pvt. Ltd.
Plot No. 928, Sector 68, IMT Faridabad, Haryana-121004

Trademark Acknowledgements:

All brand names and product names used in this book are trade names, service marks, trademarks or registered trademarks of their respective owners. VK Global Publications Pvt. Ltd. is not associated with any product or vendor mentioned in this book.

Every effort has been made to avoid errors or omissions in this publication. In spite of this, some errors might have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publishers nor the author or seller will be responsible for any damage or loss of action to anyone, of any kind, in any manner, there from. For binding mistakes, misprints or for missing pages, etc. the publisher's liability is limited to replacement within one month of purchase by similar edition. All expenses in this connection are to be borne by the purchaser.

Scanned with OKEN Scanner

Rhine

R.D

Business Organisation & Management

B.COM. Ist Year

H.P.U./S.P.U.

By

DR. MANJIT SINGH
M.Com Ph.D
Assistant Professor
Govt. Degree College **Nagrota Bagwan**

DR. PARVESH GILL
M.Com M.Phil Ph.D
Assistant Professor
Govt. Degree College **Dharamshala**

DR. SAHIL MAHAJAN
M.Com MBA Ph.D
Assistant Professor
SCVB Govt. Degree College **Palampur**

R.D PUBLICATIONS

R.D. PUBLICATIONS
N.D. 225, Tanda Road, Jalandhar.
Phone : 98721-35556, 80549-87577

Prin
GC Nagro gwan
Distt. Kangra (H.P)

All rights Reserved
(This book or a part there of may not be reproduced in any form without the written permission of the Publisher)

Neither R.D. Publications nor its authors guarantee the accuracy or completeness of any information published herein, and neither R.D. Publications nor its authors shall be responsible for any errors, omissions, or damages arising out of use of this information.

Syllabus covered

Strictly according to the syllabus prescribed by H.P.U & S.P.U for B.Com.-I

First Edition –2024

(Hindi Medium is also Available)

PRICE : 399/-

ISBN : 978-91826-78-9

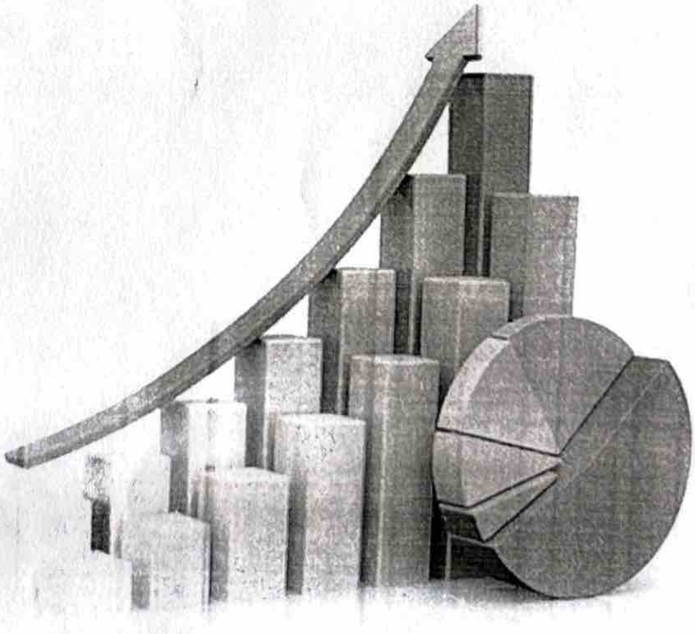

Published By : Ramandeep Kaur from R.D. Publication
N.D. 225, Tanda Road, Jalandhar.

Printed at : Ravindra Paper Mart.

महाभारत (शांतिपर्व) के राजधर्म की वर्तमान शासन में प्रासंगिकता

Kailash Chand
Assistant Professor, Department of Sanskrit,
Government College Nagrota Bagwan,
Kangra, Himachal Pradesh

भूमिका:-

भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा पश्चिमी परंपरा से प्राचीन और विशिष्ट है, हालांकि इसके अध्ययन और अध्यापन को यथोचित महत्व नहीं मिला है। वर्तमान में, पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण पाश्चात्य राजनीतिक सिद्धांतों को वैश्विक बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधि मान लिया गया है, जबकि भारतीय सिद्धांतों को सामान्य अध्ययन का विषय बनाकर छोड़ दिया गया है। भारतीय चिंतन परंपरा से कोई भी विषय अछूता नहीं है और इसमें प्राचीन एवं आधुनिक धाराओं के माध्यम से सभी जिज्ञासाओं के समाधान हेतु तार्किक विचार व्यक्त किए गए हैं, जो सार्वभौमिक बौद्धिक परंपरा का महत्वपूर्ण अंग बनने की क्षमता रखते हैं ।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने धर्म, दार्शनिक चिंतन, और अध्यात्मवाद के विकास पर विशेष ध्यान दिया, साथ ही सांसारिक उन्नति की भी उपेक्षा नहीं की। धर्म का प्रयोजन जहां नि:श्रेयस की प्राप्ति था, वहीं सांसारिक अभ्युदय भी था। भारतीय चिंतन ने यह स्वीकार किया कि समाज में प्रजा की रक्षा हेतु शासन की अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि राष्ट्र में नवीन समाज की स्थापना के लिए राजनीति को समझना आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों, जैसे ऋग्वेद और महाभारत, में राजधर्म का स्वरूप वर्णित है । इस शोधपत्र का उद्देश्य महर्षि वेद व्यास द्वारा प्रणीत महाभारत के शांतिपर्व में वर्णित राजधर्म की वर्तमान शासन में प्रासंगिकता की जांच करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा में आध्यात्मिकता के साथ-साथ आचार-विचार, ज्ञान-विज्ञान, और राजधर्म जैसे विषयों का वर्णन व्यवस्थित रूप से किया गया है। भारतीय संस्कृति के ग्रंथों में यह शिक्षा दी गई है कि राजनीति, नीति, और शासन देशहित में होना चाहिए। महाभारतकार भी इस बात का समर्थन करते हैं-

तद्राज्ये राज्यकामानां नान्यो धर्मः सनातनः ।
ऋते रक्षां तु विस्पष्टा रक्षा लोकस्य धारिणी ।।[1]

“राज्य चाहने वाले राजाओं के लिए राज्य में प्रजाओं की भलीभांति रक्षा को छोड़कर और कोई सनातन धर्म नहीं है, रक्षा ही जगत को धारण करने वाली है।”

सर्वे धर्मा राजधर्मप्रधानाः सर्वे वर्णाः पाल्यमाना भवन्ति।
सर्वस्त्यागो राजधर्मेषु राजं त्यागं धर्मं चाहुरग्र्यं पुराणं ।।[2]

“सभी धर्मों में राजधर्म ही प्रधान है, क्योंकि इसके द्वारा सभी वर्णों का पालन होता है । राजधर्म में सभी प्रकार के त्याग का समावेश है और ऋषिगण त्याग को सर्वश्रेष्ठ एवं प्राचीन धर्म बताते हैं ।”

राजधर्म का महत्व एवं संकल्पना:-

राजधर्म से तात्पर्य राजा के धर्म से है, जो राजा राज्य की संवृद्धि के लिए इस प्रकार के निर्णय लेते हैं कि सम्पूर्ण राज्य की अभिवृद्धि हो सके। राजधर्म सभी धर्मों का मूल आधार है । राजधर्म का निष्कर्ष राजा एवं राज्य व्यवस्था अथवा शासक एवं शासन व्यवस्था पर निर्भर करता है । राजा, जो स्वयं युग निर्माता होता है, अपने आचार और व्यवहार के माध्यम से युगप्रवर्तक कहलाता है । राजा समाज और राष्ट्र का नियामक होता है । समाज और राष्ट्र के उत्थान, शान्ति व्यवस्था में, और प्रजा के कल्याण में राजा के राजधर्म की महती भूमिका रहती है । राजा द्वारा राजधर्म को सभी धर्मों का मूलाधार कहा गया है।

त्रिवर्गो हि समासक्तो राजधर्मेषु कौरव ।
मोक्ष धर्मश्च विस्पष्टः सक्लोऽत्र समाहितः ।।[3]

राजधर्म में धर्म, अर्थ, और काम तीनों का समावेश है । इतना ही नहीं, सम्पूर्ण मोक्षधर्म भी राजधर्म में निहित है राजधर्म ही सभी मनुष्यों को संरक्षण प्रदान करता है । राजधर्म का पालन करते हुए मनुष्य परम पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्त करता है जैसे सूर्य उदय होकर घोर अन्धकार को नष्ट कर देता है।

यथा हि रश्मयोऽश्वस्य द्विरदस्याङ्कुशो यथा ।
नरेन्द्रधर्मो लोकस्य तथा प्रग्रहणं स्मृतम् ।।[4]

राजधर्म ही सभी मनुष्यों को संरक्षण प्रदान करता है, जिससे वर्णाश्रमधर्म पालन करते हुए मनुष्य परम पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्त करता है। जैसे सूर्य उदय होकर घोर अन्धकार को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार सम्पूर्ण जीवलोक के आधारस्वरूप राजधर्म द्वारा प्राणियों की अशुभ गति का निवारण होता है ।

उदयन् हि यथा सूर्यो नाशयत्य शुभं तमः ।

Principal
GC Nagrota Bagwan
Distt. Kangra (H.P)

ISBN: 978-93-6008-752-4

राजधर्मस्तथालोक्यां निक्षिपन्त्यशुभांगतिम् ।।[5]

जिस राष्ट्र में प्रजा आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं के भय से मुक्त नहीं, वहाँ धर्म, शान्ति और सुव्यवस्था की कल्पना ही कैसे की जा सकती है? अतः शान्तिपर्व में सभी धर्म राजधर्म में उसी प्रकार लीन माने गये हैं जिस प्रकार हाथी के पाँव के चिन्ह में सभी प्राणियों के पाँव के चिह्न लीन हो जाते हैं ।

यथा राजन् हस्तिपदे पदानि संलीयन्ते सर्वसत्त्वोद्भवानि ।
एवं धर्मान् राजधर्मेषु सर्वान् सर्वावस्थान् सम्प्रलीनान् निबोध ।।[6]

शान्तिपर्व के अनुसार राजा को सबसे पहले प्रजा को प्रसन्न रखने की इच्छा से देवताओं और ब्राह्मणों के प्रति शास्त्रोक्त विधि के अनुरूप व्यवहार करना चाहिए और पुरुषार्थ के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए । पुरुषार्थ के बिना केवल प्रारब्ध ही राजाओं का प्रयोजन नहीं सिद्ध कर सकता । इस प्रकार राजधर्म में कर्तव्य का परिपालन सर्वोत्तम बताया गया है ।

उत्थानेन सदा पुत्र प्रयतेया युधिष्ठिर ।
न ह्युत्यानमृते दैवम् राज्ञामर्थ प्रसादयेत्।।[7]

महाभारत के शान्तिपर्व में इन्द्र और मान्धाता संवाद के अन्तर्गत युधिष्ठिर को भीष्म पितामह ने महाभारत के युद्ध के पश्चात् पलायनवादी बनने के लिए राजधर्म को सबसे श्रेष्ठ मानकर उसे सही रूप में कर्त्तव्य का बोध कराया है । जो धर्म प्रत्यक्ष है, अधिक सुखमय है, आत्मा के साक्षात्कार के उपयुक्त है, छलरहित है, और सर्व-हितकारी है, वह धर्म राजधर्म में प्रतिष्ठित है। भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं कि एक बार सारा संसार दानवता के समुद्र में डूबकर उच्छृंखल हो गया था। उन्हीं दिनों पृथ्वी पर मान्धाता नाम का राजा था । उसने मन, कर्म और वचन से नारायण के दर्शन की इच्छा से एक यज्ञ का अनुष्ठान किया। श्री हरि ने प्रसन्न होकर इन्द्र का रूप धारण कर उसे दर्शन दिए। उन दोनों में जो संवाद हुआ उसे मैं तुम्हें सुनाता हूँ: इन्द्र ने राजा मान्धाता से पूछा- 'तुम सर्वशक्तिमान् विष्णु के दर्शन क्यों करना चाहते हो, इसका क्या कारण है? तुम्हारी क्या इच्छा है? उस विष्णु को मैं और ब्रह्मा भी नहीं देख सकते हैं! तो तुम कैसे देख सकते हो? तुम मनुष्यों के राजा हो, तुम्हारे मन में कोई कामना हो तो उसे मैं पूर्ण कर देता हूँ। मैं तुम्हारे आचरण और भक्ति से प्रसन्न होकर तुम्हें वर दे सकता हूँ।' ऐसी इन्द्र की बात सुनकर राजा मान्धाता ने कहा- 'भगवन्! मैं आपकी दया से विष्णु भगवान के दर्शन अवश्य ही कर लूँगा । इस समय मैं अपनी समस्त कामनाओं का परित्याग कर चुका हूँ । मैं धर्म सम्पादन

ISBN: 978-93-6008-752-4

की इच्छा से वन में जाना चाहता हूँ क्योंकि सभी सत्पुरुष अन्त में इस मार्ग का दिग्दर्शन करा गये हैं।' इस पर मान्धाता की बात सुनकर इन्द्र बोले- 'राजन्! विष्णु से पहले राजधर्म ही प्रवृत्त हुआ है । पूर्वकाल में विष्णु भगवान ने भी राजधर्म के द्वारा ही शत्रुओं का दमन कर देवताओं और ऋषियों की रक्षा की । अतः राजधर्म ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि युद्ध में अपने शरीर की आहुति देना, समस्त प्राणियों पर दया करना, और दुखी - पीड़ित मनुष्यों के कष्ट को छुड़ाना ये सब बातें राजाओं के क्षत्रियधर्म या राजधर्म में विद्यमान हैं ।'

कर्मणा वै पुरा देवा ऋषभश्चामितौजसः।
त्राताः सर्वेष प्रसह्यारीन् क्षत्रधर्मेण विष्णुना ।।[8]
आत्मत्यागः सर्वभूतानुकम्पा लोकज्ञानं पालनं मोक्षणंच ।
विषण्णानां मोक्षणं पीडितानां क्षात्रे धर्मे विद्यते पार्थिवानाम् ।।[9]

वर्तमान शासन में प्रासंगिकता :-

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में जिस प्रकार मूल्यों का ह्रास हो रहा है, यह एक चिन्तनीय विषय है । विश्वगुरु कहे जाने वाले भारतवर्ष में दुर्भाग्यवश विदेशी आक्रान्ताओं के शासन ने भारत के समूचे ज्ञान, विज्ञान, सभ्यता और संस्कृति को धूमिल कर दिया। वर्तमान दौर में विशेषकर नौजवान पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति में इतनी घुलमिल गई है कि अपनी अस्मिता और गौरव को किनारे रखकर केवल पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करती दिख रही है, जो समूचे राष्ट्र के लिए अत्यन्त चिन्ता और लज्जा का विषय है ।

वर्तमान राजनीति भी इस संस्कृति और सभ्यता से अछूती नहीं है । हमारे माननीय नेतागण प्रजा के हितों को किनारे रखकर केवल सत्ता के लालच में हैं । आजकल पत्रकारिता और संचार के माध्यम से जो बातें जनता के सामने आ रही हैं, उनमें भ्रष्टाचार के कारण कई नेता न्यायालय के चक्कर लगा रहे हैं और कुछ कारावास की सजा काट रहे हैं । प्राचीन भारत में प्रजा का हित राजा का परम कर्तव्य या धर्म था, पर आज इसका अभाव हो गया है । वर्तमान में सभी नेता सत्ता के लोलुप हैं, लेकिन अपने राजधर्म को भूल गए हैं; उन्हें केवल स्वार्थ ही अच्छा लग रहा है। प्रजा की पीड़ा का उन्हें कोई आभास नहीं है ।

ऐसी परिस्थितियों को देखकर प्रजा संतप्त होती जा रही है और नेताओं के प्रति घृणा की भावना बढ़ती जा रही है। अतः वर्तमान दौर में जनप्रतिनिधियों को राजधर्म अपनाने की आवश्यकता है। हमारे भारतीय शास्त्रों में राष्ट्र प्रेम की भावना विकसित

करने के लिए विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से हमें प्रेरणा मिलती है । जब राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के मन में देश के कल्याण का संकल्प रहेगा, तभी राष्ट्र की उन्नति संभव है। भारतीय ज्ञान परंपरा में यह भावना है कि सभी सुखी रहें, सभी निरोगी रहें, और सभी का कल्याण हो । यही भावना हमे राष्ट्रीय स्वाभिमान, आत्मविश्वास और आत्मानुभूति को प्राप्त करने में मदद करती है। इसके लिए सबसे आवश्यक है कि सम्पूर्ण राष्ट्र में राजा का राजधर्म हो, क्योंकि बिना राजधर्म के राष्ट्र कभी भी विकसित और सुरक्षित नहीं हो सकता । व्यवस्था के ऊपर धर्म का अंकुश होना अत्यावश्यक है क्योंकि नीति (धर्म) ही सत्य है। इसी धर्म के पालन से राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रजा केवल विकास ही नहीं, बल्कि शांति भी प्राप्त कर सकती है । शांति पर्व का मूल उद्देश्य राजधर्म के साथ-साथ मोक्षधर्म को प्राप्त करना है।

संदर्भ-

1. महाभारत, शांति पर्व 57/42
2. महाभारत, शांति पर्व 63/27
3. महाभारत, शांति पर्व 56/04
4. महाभारत, शांति पर्व 56/05
5. महाभारत, शांति पर्व 56/07
6. महाभारत, शांति पर्व 63/25
7. महाभारत, शांति पर्व 56/14
8. महाभारत, शांति पर्व 64/23
9. महाभारत, शांति पर्व 64/27

Select Bibliography

Hindi Book:

1. भट्टाचार्य, प. (2018). महाभारत के शांतिपर्व में राजधर्म : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. कलकत्ता विश्वविद्यालय प्रेस.

2. शर्मा, के. (2017). महाभारत और आधुनिक राजनीति : राजधर्म की प्रासंगिकता. भारतीय प्रकाशन.

3. गुप्ता, अ. (2019). राजधर्म और वर्तमान शासनः महाभारत की शिक्षाएँ. सामाजिक शोध पत्रिका, 12(3), 45-56.

4. सिंह, ब. (2020). महाभारत के शांतिपर्व में राजधर्म और आधुनिक नीति. हिंदी विश्वविद्यालय.

5. नारायण, एस. (2021). महाभारत के शांतिपर्व का समकालीन राजनीति पर प्रभाव. भारतीय विचार और राजनीति, 8(2), 89-102.

English Book:

1. Kumar, R. (2022). *Rajdharma in the Shantiparva of Mahabharata : Its Relevance to Modern Governance. International Journal of Indian Studies*, 15 (4), 234-250.
2. Patel, A. (2020). *Governance and Dharma: Insights from Mahabharata's Shantiparva*. Asian Studies Review, 24 (1), 112-127.
3. Singh, R. (2019). *The Concept of Rajdharma in Mahabharata's Shantiparva and Its Implications for Contemporary Politics*. Journal of South Asian Studies, 11(2), 76-89.
4. Verma, P. (2021). *Exploring Rajdharma: A Comparative Study of Shantiparva and Modern Political Ethics*. Political Philosophy Quarterly, 9(3), 95-110.
5. Mehta, J. (2023). *The Role of Rajdharma in Shantiparva and Its Modern-Day Relevance*. Indian Governance Review, 18 (1), 154-169.

Principal
GC Nagrota Bagwan
Distt. Kangra (H.P)

About the

Dr. Paritosh Bisw
scholar and leader
from the culturall
district of West B
serving as the Asso
the Department o
Teacher-in-Charg
College, he combi
expertise in organi
passion for fo
education. Dr. Bisv
M.Sc. in 1994 and
Organic Chem
University of Kaly
synthetic organi
innovative resear
publications ha
recognition in b
international sci
Biswas has rec
accolades, includi
of West Bengal Me
UGC-CSIR
underscoring h
academic excelle
Life Member of th
for the Cultiva
reflecting his
advancing scient
fostering innovat
experienced and
Dr. Biswas excels
physical, and
chemistry, shap
journeys of his st
he serves as the
reviewed publica
in Dharmaśāst
where his interd
bridges scientifi
ethical wisdom
unwavering ded
excellence ar
continues to i
researchers alik

First Published on 21st June, 2025

By

Amitrakshar®

Publishers

Kolkata – 700068

© Copyright Reserved by Editor

ISBN: 978-93-6008-752-4

(Hardback)

[ISBN has been Approved by : 21/10/2024]

Price: 800.00

Title of the Book:

Ethical Insights in Dharmaśāstra and Nītiśāstra

Editor:

Dr. Shiladitya Satpathi (ড: শিলাদিত্য সৎপথি)

Language: Bengali

Publisher and Type Setter: Amitrakshar Publishers

Typeset in Bangla Multiple fonts

Page No.: 295

Printed by: Amitrakshar Publishers & M. Enterprises

Website: www.amitrakshar.co.in

Email id: amitraksharpublishers@gmail.com

Phone number: 9735768900

Published by:

AMITRAKSHAR® PUBLISHERS

Office: 1/199, Jodhpur Park, Gariahat Road, Kolkata- 700068

All rights reserved. No part of this book may be reprinted or reproduced or utilised in any form or by any electronic, mechanical or other means, now known or hereafter invented, including, photocopying and recording, or in any information shortage or retrieval system, without permission in writing form the publisher.

The characters, places, organisations and events described in this book are either a work or author's imagination or have been used fictitiously. Any resemblance to people, living or dead, places, events communities or organisations is purely coincidental.

Book Chapter

हिमाचल प्रदेश में गुज्जर जनजाति की आर्थिकी

डॉ. सोनिका
सहायक आचार्य (वाणिज्य)
राजकीय महाविद्यालय, नगरोटा बगवां
ई मेल : sonikadhanna8899@gmail.com

सारांश

हिमाचल प्रदेश की दुर्गम पहाड़ियों और प्राकृतिक परिदृश्यों में बसे जनजातीय समुदायों का जीवन अनूठी चुनौतियों से जूझता है। ये समुदाय न केवल भौगोलिक दृष्टि से मुख्यधारा से अलग हैं, बल्कि उनकी जीवनशैली, आजीविका और सामाजिक संरचना में भी विशिष्टता पाई जाती है। चंबा, किन्नौर और लाहौल-स्पीति जैसे क्षेत्रों में स्थित जनजातीय समुदाय अपनी पारम्परिक व्यवस्थाओं के साथ आज भी प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं। इनमें गद्दी, गुज्जर, किन्नौरा और लाहौला जनजातियां प्रमुख हैं, जिनमें प्रत्येक का अपना विशिष्ट सांस्कृतिक और सामाजिक स्वरूप है। प्रस्तुत शोध का केंद्र गुज्जर जनजाति और उनकी आर्थिकी है, जो हिमाचल प्रदेश के जनजातीय समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पारम्परिक रूप से गुज्जर जनजाति का जीवन पशुपालन और कृषि पर आधारित रहा है। उनके द्वारा मौसमी प्रवास और पशुओं के चारे के लिए ऊंचे पहाड़ों और मैदानी क्षेत्रों के बीच आवागमन, उनकी आजीविका का अभिन्न अंग है। हालांकि, बदलते समय के साथ शिक्षा, तकनीकी प्रगति और संचार के साधनों ने इस समुदाय में नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। इसके बावजूद उनकी पारम्परिक जीवनशैली और सांस्कृतिक विरासत को बाहरी प्रभावों से खतरा भी है। यह शोध गुज्जर जनजाति के जीवन और उनके आर्थिकी के गहन विश्लेषण के माध्यम से उनके समग्र विकास हेतु संभावित नीतिगत सुझाव भी प्रदान करता है।

Principal
GC Nagrota Bagwan
Distt. Kangra (H.P)